आधुनिकता के दौर में आदिवासी संस्कृति की चुनौतियाँ

मनीष कुमार
शोधार्थी(हिंदी विभाग)दिल्ली विश्वविद्यालय

शोध-सार : भारत विविधताओं से पूर्ण देश है । आदिवासी समुदाय भारतीय समाज का एक अविभाज्य अंग है । भारत की सामासिक संस्कृति में आदिवासी संस्कृति की एक विशिष्ट पहचान है। आदिवासी समुदाय की विशिष्ट पहचान का कारण इनकी सामूहिकता, प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व, लोक-परम्परा, पर्व-त्यौहार और धार्मिक-आस्थाएं है। इसके साथ-साथ वाचिकता का एक सुदीर्घ इतिहास आदिवासी संस्कृति की विशिष्टता है, जिसके माध्यम से ये अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण सदियों से करते आ रहे हैं। लेकिन, समय के साथ बदलते वैश्विक परिदृश्य और आधुनिकता के दुष्प्रभावों के कारण इन्हें अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। आगे इस शोध-आलेख में हम आधुनिकता के कारण होने वाले सांस्कृतिक बदलावों और आदिवासी समुदाय के सांस्कृतिक मूल्यों को रेखांकित करने का प्रयास करेंगे। वर्षों से जो आदिवासी समुदाय अपनी संस्कृति का संरक्षण करते हुए आ रहा है, वह वर्तमान में किस प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहा है, उसको जानने और समझने का प्रयास करेंगे ।

बीज - शब्द :- आदिवासी, आधुनिकता, संस्कृति, प्रकृति, सह-अस्तित्व, धर्म, सामूहिकता, भाषा, धार्मिक-आस्था, सरना-स्थल, औद्योगीकरण ।

मूल - आलेख :- किसी भी समुदाय की संस्कृति उसकी जातीय पहचान का प्रतीक होता है। यह ईश्वर प्रदत्त नहीं अपितु मानव निर्मित होता है। मानव केवल जैविक प्राणी ही नहीं अपितु सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्राणी भी होता है। यह संस्कृति ही है जो मनुष्यों को अन्य सभी प्राणियों से सबसे अलग बनाती है। यह मनुष्य के जीवन को दिशा के साथ-साथ उद्देश्य भी प्रदान करता है। किसी भी समुदाय के विकास और श्रेष्ठता का स्तर उसकी संस्कृति से पहचाना जाता है। ‘‘संस्कृति का सीधा-सादा अर्थ है परिष्कार या संस्कार। वस्तुतः परिमार्जित संस्कार ही संस्कृति है। प्रकृति की सीमाओं पर मनुष्य ने जो विजय चाही, उसका भौतिक स्वरूप, सभ्यता और आत्मिक, आध्यात्मिक अथवा मानसिक स्वरूप संस्कृति है। सभ्यता बाह्य-प्रकृति पर हमारी विजय का गर्व-ध्वज हाँ और संस्कृति अंततः प्रकृति पर विजय-प्राप्ति की सिद्धि।’’ संस्कृति केवल सामुदायिक पहचान

ही नहीं अपितु आत्मा होती है। इसका संबंध अतीत से तो होता ही है, साथ ही यह वर्तमान और भविष्य को भी प्रभावित करता है। संस्कृति के बिना एक समाज दिशाहीन हो जाता है। ई. वी. टेलर के अनुसार ''संस्कृति वह जटिल इकाई है जिसके अंतर्गत आचार-विचार, विश्वास, रीति-रिवाज, विधि-विधान एवं परम्पराएँ आती हैं। इसके अंतर्गत सभी समताएं एवं आदतें शामिल है।'' भारत जैसे विशाल देश की संस्कृति सामासिक है। सदियों से विभिन्न संस्कृतियाँ एक दूसरे के साथ सह-अस्तित्व की भावना के साथ रहती आ रही है। आदिवासी संस्कृति भी उनमें से एक है और इसका एक अभिन्न हिस्सा है। आदिवासी संस्कृति को समझने से पूर्व 'आदिवासी' शब्द की परिभाषा समझना आवश्यक है। आदिवासी कौन हैं? इसक प्रश्न का उत्तर देते हुए डॉ. विनायक तुकाराम बताते हैं की- ''वर्तमान स्थिति में 'आदिवासी' शब्द का प्रयोग विशिष्ट पर्यावरण में रहने वाले, विशिष्ट भाषा बोलने वाले, विशिष्ट जीवन पद्धति तथा परम्पराओं से सजे और सदियों से जंगलों-पहाड़ों में जीवनयापन करते हुए अपने धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को संभलकर रखने वाले मानव-समूह का परिचय करा देने के लिए किया जाता है।'' इन्हें इसके अतिरिक्त वनवासी, वन्य-जनजाति, जंगली, जनजाति, आदिम जाति आदि नामों से भी पुकारा जाता है। ''भारत की कुल आबादी के लगभग 8.08 प्रतिशत हिस्से को अनुसूचित जनजातियों (शेड्यूल ट्राइब्स या एस. टी.) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। यह शब्द उन जन-समुदायों के लिए प्रयुक्त किया जाता है, जिन्हें भारत के राष्ट्रपति ने संविधान के अनुच्छेद-342 के अधीन अनुसूचित जनजातियों के तौर पर निर्दिष्ट किया है। दरअसल, यह एक प्रशासनिक शब्द है - जिससे किसी विशेष क्षेत्रीयता का संकेत मिलता है। इसका उद्देश्य किसी जन- समुदाय की विशिष्ट वांशिक स्थिति से ज्यादा उसके सामाजिक-आर्थिक स्तर का परिचय देना है।'' आदिवासी समुदाय की पहचान के संबंध में विद्वानों में मत-भिन्नता देखने को मिलती है। इनकी संस्कृति की मूल पहचान इनकी सामूहिकता, सहभागिता, प्रकृति से निकटस्थ संबंध एवं प्रेम, भाषा, लोक-कला इत्यादि है, जो इन्हें अन्य संस्कृतियों से अलग पहचान देती है। आदिवासी समुदाय की एक और विशेषता इनकी वाचिक/मौखिक परंपरा है। इसके ही माध्यम से यह समुदाय अपनी सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण एवं अगली पीढ़ी में प्रेषण सदियों से करता आया है। भारत में हुए विदेशी आक्रांताओं के लगातार हमलों एवं तत्पश्चात अंग्रेजी सरकार के शासन के कारण आदिवासी समुदाय की संस्कृति पर आघात होना शुरू हो गया था। जिसके कारण इन्हें समय-समय पर इनसे अपनी संस्कृति के संरक्षण के लिए संघर्ष भी करना पड़ा।

आधुनिकता की सामान्य अर्थ - 'नवीनता' माना जाता है. नवीनता केवल उपकरणों, तकनीकों और जीवन-शैली में ही नहीं अपितु सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रक्रिया के माध्यम से निरंतर समाज परिवर्तन में भी है। इसके साथ-साथ एक ऐसे मानस को विकसित करता है जो तर्क, विज्ञान, व्यक्तिवाद और प्रगतिशीलता पर आधारित होता है। आधुनिकता ने, शिक्षा, संचार, रोजगार, तकनीकी विकास के माध्यम से पारम्परिक समाज व्यवस्था, धार्मिक मान्यताओं और सांस्कृतिक मूल्यों एवं जीवन-शैली को व्यापक रूप से निश्चित ही प्रभावित किया है। इसलिए ऐसा नहीं बोल सकते हैं की इसके प्रभाव से आदिवासी समुदाय अछूता रह गया हो। आधुनिकता का आदिवासी समुदाय पर प्रभाव मिश्रित रूप से पड़ा है। जहाँ एक ओर शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और संचार के माध्यम से जीवन का विकास हुआ, वहीं दूसरी ओर इसकी परंपरा, संस्कृति, पारंपरिक-ज्ञान और जीवन-पद्धति के साथ-साथ पहचान का संकट भी उत्पन्न हो गया है। आदिवासी संस्कृति के प्रमुख लक्षण सामूहिकता, प्रकृति के साथ सामंजस्यवादी जीवन, धार्मिक मान्यताएं एवं लोक-कलाएं आदि। उपरोक्त लक्षणों के आधार पर आधुनिकता के दुष्प्रभावों की विस्तृत चर्चा आगे इस आलेख में करने का प्रयास करेंगे।

1. सामूहिकता सामूहिकता, आदिवासी संस्कृति का सबसे प्रमुख आधार है और सदियों से इसी प्रकार एक साथ रहते आए है। सामूहिकता से तात्पर्य है - सामूहिक श्रम, सामूहिक निर्णय, सामूहिक उत्सव, सामूहिक-धार्मिक-आस्था, सामूहिक उत्तरदायित्व के साथ-साथ समाज के सभी सदस्यों के बीच परस्पर सहयोग, समानता एवं सहभागिता। यहाँ वैयक्तिकता के स्थान पर सामूहिकता का अधिक महत्व होता है। यह भाव सामाजिक व्यवहार के साथ-साथ आर्थिक और धार्मिक जीवन में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। आधुनिकता के प्रभाव के कारण आदिवासी समुदाय की सामूहिकता की जीवन-शैली के स्थान पर व्यक्तिवाद एवं उपभोक्तावाद ने स्थान लेना आरंभ कर दिया। पारंपरिक पर्व-त्यौहार, लोकगीत, लोक-नृत्य और धार्मिक आस्थाएँ शनैः-शनैः कमजोर पड़ता जाता रहा है। इसका एक सबसे बड़ा कारण है-'विस्थापन'। औद्योगीकरण और विकास परियोजनाओं ने आदिवासियों को उनके जल, जंगल, जमीन से विस्थापित होने के लिए मजबूर किया है। यह विस्थापन केवल शारीरिक ही नहीं अपितु मानसिक और सांस्कृतिक भी होता है। एक और जहाँ अपने प्राकृतिक आवास से दूर हो जाने के कारण प्रकृति से जुड़ाव का भाव कमजोर पड़ने लगता है, वहीं दूसरी ओर तथाकथित सभ्य समाज की तड़क-भड़क संस्कृति के सामने इन्हें अपनी संस्कृति के प्रति हीनता का भाव आने लगता है। विस्थापन/पलायन के कारण आदिवासी समुदाय

के सदस्य अलग-अलग स्थानों पर बसने लगते हैं तो उनके मध्य पारंपरिक सामाजिक संबंध टूटने लगते हैं। सामूहिक निर्णय प्रणाली और पारंपरिक नेतृत्व भी कमजोर पड़ने लगता है। भारत के सभी आदिवासी समुदाय सामान्यतः कृषि पर ही आधारित है। इनके सभी पर्व-त्यौहार ऋतु-चक्र पर ही आधारित होता है। इस संदर्भ में आदिवासी लोक-नृत्य इनकी सामूहिकता के भाव को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है। आधुनिक संचार प्रणाली के माध्यम से युवा वैश्विक-समाज से जुड़ रहे हैं, लेकिन स्थानीय सामाजिक संबंध कमजोर पड़ने लगा है। पहले सामूहिक स्थलों, मेलों या धार्मिक-स्थानों पर मिलना-जुलना होता रहता था। किंतु अब उसका स्थान मोबाइल और सोशल-मीडिया ने ले लिया है।

2. भाषा - भारत विविधताओं वाला देश है। सभी समुदाय अपनी विशिष्ट पहचान के साथ अन्य समुदायों के साथ रहती आ रही है। आदिवासी समुदाय इस देश का एक अविभाज्य अंग है। आदिवासी समाज की संस्कृति 'लोक' में ही रचती-बस्ती है। सांस्कृतिक विशिष्टता के साथ-साथ भाषागत विशिष्टता भी आदिवासियों में मिलती है, क्योंकि इनका सारा साहित्य मौखिक या वाचिक परम्परा का हिस्सा है और मौखिक रूप में ही सदियों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी सम्प्रेषित होती आई है। आदिवासी लिखित साहित्य लगभग न के बराबर उपलब्ध है, जिसके कारण आदिवासी समुदाय की सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन व्यापक रूप में नहीं हो सका है। अध्ययन की इस समस्या का एकमात्र कारण लिखित साहित्य नहीं होने के तर्क से आदिवासी साहित्यालोचक वंदना टेटे पूर्णतः सहमत नहीं हैं। उनका मानना है कि "यह अवधारणा औद्योगिक विकास से उपजी स्कूलिंग सिस्टम के जरिए सत्य की तरह स्थापित कर दी गई है, जिसके पास लिपिबद्ध व्याकरण है। इसी तरह से साहित्य भी वही है जो एक व्याकरण संगत भाषा के जरिए लिखा गया है। इस एकपक्षीय अवधारणा के कारण आदिवासी भाषाएँ बोलियाँ हैं और उनका साहित्य, साहित्य नहीं है। वह अनगढ़ और मौखिक साहित्य है। चुकि आदिवासियों के पास लिखित भाषा और साहित्य नहीं है, इसलिए इसके पास न तो इतिहास है, न ही ज्ञान - विज्ञान की कोई बौद्धिक और कलात्मक कौशल की परंपरा।" आलोचक वंदना टेटे की बात को अगर सच मान भी लें तो भी ये पूरा सच नहीं माना जा सकता है। भाषा केवल विचारों को मूर्त रूप देने का माध्यम भर नहीं है। भाषा उस जाति की के साथ- साथ उसकी संस्कृति को भी अनंत काल के लिए जीवित रखती है। "भाषा के द्वारा मान अपने मन के भाव को प्रकट करता है, सामाजिक आदान-प्रदान व सामाजिक अन्तःक्रिया में भाग लेता है।" दुनिया में जिस भी

भाषा की लिपि का विकास नहीं हो पाया या नहीं किया गया, आज वह विलुप्त होने के कगार पर खड़ी है। औपनिवेशिक शासन के दौरान आदिवासी समुदाय आधुनिक शिक्षा के सम्पर्क में आए। अंग्रेजों ने केवल अपनी सुविधा की दृष्टि से इनको शिक्षित करने का कार्य किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आधुनिक शिक्षा पद्धति का विकास हुआ। अंग्रेजी, हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में शिक्षा दी जाने लगी। इससे सबसे ज्यादा नुकसान आदिवासी भाषाओं का हुआ क्योंकि आदिवासी बच्चों को अपनी मातृभाषा के बजाय इन भाषाओं में शिक्षा ग्रहण करने के लिए बाध्य होना पड़ा। जिसके कारण धीरे-धीरे वे अपनी भाषा से दूर होने लगे एवं अपनी भाषा को पिछड़ी भाषा मानने लगे। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में वर्चस्ववादी संस्कृत का प्रभुत्व होने के कारण यही रोजगार की भी भाषा बनी। आदिवासी युवा एवं युवतियों को इसके लिए मुख्यधारा की भाषा को अपनाना पड़ा। आधुनिकता के कारण शहरीकरण का विस्तार भी तेजी से हुआ। बेहतर जीवन पाने की ललक और मुख्यधारा की तड़क-भड़क संस्कृत की और आकर्षित हुए साथ ही उनकी भाषा को भी सहर्ष स्वीकार कर लिया। आज की स्थिति ऐसी है की आदिवासी समुदाय के बच्चे या परिवार जो शहरों में रहकर आधुनिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, उन्हें अपनी मातृभाषा में बात करना भी नहीं आता है। ''युनेस्को (UNESCO) ने अपनी रिपोर्ट (2009) में कहा कि कुल 6,000 भाषाओं में से पिछले 25 वर्षों में कोई 200 भाषाएँ विलुप्त हो गयी है। साथ ही 2500 भाषाओं को खतरे में बताया गया है। इनमें से 196 भाषाएँ भारत की हैं, जिसमें अधिकांश भाषाएँ आदिवासी है।'' आदिवासी भाषाओं के विलुप्त हो जाने से केवल शब्द ही नहीं बल्कि एक पूरी संस्कृति समाप्त हो रही है। इनकी भाषाओं में प्रकृति के गूढ़ तत्व, जंगल, पारंपरिक औषधीय पौधे और पर्यावरण संबंधी अनमोल ज्ञान छिपा होता है। भाषा के नष्ट होने से यह ज्ञान भी हमेशा के लिए नष्ट होता जा रहा है। साथ ही आदिवासी समुदाय अपनी सांस्कृतिक पहचान और आत्मसम्मान से भी वंचित होते जा रहे हैं।

3. धार्मिक-आस्था धर्म, किसी भी समुदाय की संस्कृति का एक प्रमुख अंग होता है। यह आत्मविश्वास जगाकर आत्मसम्मान से जीने के काबिल बनाती है। ''धर्म एवं संस्कृति का अन्योन्याश्रय संबंध होता है। सामाजिक मनुष्य का प्रत्येक क्रियाकलाप संस्कृति कहलाता है।'' आदिवासी समुदाय अपनी विशिष्ट धार्मिक परम्पराओं के लिए जाना जाता हैं। संसार की हर वस्तु का एक नैसर्गिक स्वभाव होता है और यही स्वभाव धर्म कहलाता है। ''किसी भी धर्म के दो भाग होते हैं-

1. अलौकिक की शक्ति में विश्वास तथा 2. अलौकिक के प्रति धार्मिक कार्य-प्रणाली। शुरू से ही सामाजिक मानवशास्त्रियों की सहमति है कि सभी जनजातियां धार्मिक कार्यप्रणाली को बहुत बड़ा महत्व देती है।'' इनकी धार्मिक परम्परा में प्रकृति-पूजा, लोक-देवताओं की पूजा एवं सामूहिक अनुष्ठानों के आयोजन का विशेष महत्व है। किंतु आधुनिकता और औद्योगीकरण के प्रभाव ने आदिवासियों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न कर दी हैं। आदिवासी बहुत ही सीधे और सरल प्रवृत्ति के होते हैं। आधुनिक शिक्षा के माध्यम से ईसाई मिशनरियों ने आदिवासियों के बीच अपना प्रभाव और विश्वास बनाया और फिर धीरे-धीरे उन्हें अपने धर्म में परिवर्तित करने का प्रयास करने लगे। कुछ ने तो अपनी स्वेच्छा से ईसाई धर्म अपना लिया, लेकिन अधिकांश को प्रलोभन देकर परिवर्तित होने के लिए बाध्य किया गया। ''ईसाई धर्म के प्रभाव में आनेवाले जनजातीय समुदायों के अनेक मूल्य, मान्यताएं और संस्थाएँ नष्ट हो गई। जनजातियों में अत्यंत लोकप्रिय 'युवागृह' के भाग्य का सूरज डूब गया। स्पष्टतः मिशनरी केवल गिरजाघरों को धार्मिक सभाओं को धार्मिक सभाओं का कार्यस्थल बनाना चाहते थे।'' आदिवासी समुदाय के धार्मिक अनुष्ठान के केंद्र में प्रकृति होता है। इनकी धार्मिक मान्यताओं को सबसे ज्यादा नुकसान विकास के नाम पर आधुनिक परियोजनाओं के लिए भूमि-अधिग्रहण के कारण होने वाले विस्थापन के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों के दोहन ने किया है। आदिवासियों के धार्मिक स्थल को 'सरना-स्थल' या 'जाहिर-स्थान' कहा जाता है। यह हर ग्राम की सीमा पर या नजदीकी वन के पास होता है। इसकी पवित्र धार्मिक स्थल के रूप में पूजा की जाती है। यहाँ के वृक्षों को काटने या प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुंचाने के कारण धार्मिक-केंद्र नष्ट हो रहे हैं। जिसके कारण आदिवासी युवा अपने समुदाय के धार्मिक गतिविधियों से दूर होते जा रहे हैं। आधुनिक। शिक्षा ने युवाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास एवं जागरूकता बधाई, लेकिन पारंपरिक धार्मिक मान्यताओं को अंधविश्वास और अप्रासंगिक मानने लगे। मुख्यधारा के धर्मों और संस्कृतियों के संपर्क एवं प्रभाव में आने से आदिवासी समुदाय का सांस्कृतिक समावेशन भी होने लगा है, जिसके कारण इनकी धार्मिक पहचान संबंधी एक गहरा संकट उत्पन्न हो गया है।

4. लोक-कलाएं :- आदिवासी समुदाय की लोक-कलाएं भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके अंतर्गत चित्रकला, नृत्य, संगीत, गीत आदि जैसी विधाएं शामिल है। ''इंसान की मौलिक जीवन दृष्टि और सामूहिक समझ का अनंत विस्तार आदिवासी कलाओं में है। सृष्टि के अद्भुत सौंदर्य तथा जीवन राज के

विविध रंगों का यह आदिवासी विश्व उनकी देशज तकनीक और ज्ञान विज्ञान की भी सुदीर्घ पर परंपरा से हमारा परिचय कराती है।'' आदिवासी समुदाय के जीवन-दर्शन एवं धार्मिक-विश्वास की पूर्ण अभिव्यक्ति लोक-कलाओं के माध्यम से होता है। चित्रकला संभवतः सबसे पहली भाषीक अभिव्यक्ति है। इसके माध्यम से आदिवासी समुदाय अपने भावों, विचारों और सुख-दुःख के व्यक्तिगत एवं सामाजिक के सभी रूपों की अभिव्यक्ति करता है। आधुनिकता के प्रभाव से जहाँ एक ओर इन कलाओं की पहचान राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हुई है, वहीं दूसरी ओर मौलिक स्वरूप को बचने की चुनौती उत्पन्न हुई है। पूर्व में चित्रकलाएं, नृत्य, गीत आदि की रचना धार्मिक एवं सांस्कृतिक जरूरतों को पूरा करने के लिए किया जाता था। लेकिन, आजकल व्यवसायीकरण हो जाने के कारण बाज़ार की माँग के अनुरूप तैयार किए जाते हैं। जैसे वारली, गौंड, सोहराय, जादोपटिया चित्रकलाएं अब राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में बिक रही हैं। गैर-आदिवासी पृष्ठभूमि से आने वाले कलाकार भी अब आदिवासी चित्रकला करने लगे हैं। लेकिन रचनात्मकता के लिए आदिवासी मानस कहाँ से लायेंगे? इसी प्रकार आधुनिकता के कारण लोक-गीतों एवं नृत्यों में भी व्यापक परिवर्तन आया है। ''कोई भी पर्व-त्यौहार बिना संगीत, गीत-नृत्य एवं नाट्य के बिना अधूरे हैं। यह आदिवासी जन-जीवन की सामूहिकता की एक पहचान है।'' पहले जो केवल आदिवासियों तक ही सीमित रहता था, अब मोबाइल और अन्य माध्यमों से वृहद् जनमानस तक पहुँच रहा है। लेकिन, पर्यटन उद्योगों और सांस्कृतिक आयोजनों में आवश्यकता अनुसार प्रस्तुति के कारण सामजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक महत्त्व कम होता जा रहा है। समग्र रूप से विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है की आधुनिकता से प्राप्त अवसर का लाभ लेते हुए आदिवासी लोक-कलाओं की मौलिकता और प्रमाणिकता सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।

उपरोक्त चर्चा के आधार पर निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि- आधुनिकता के दौर में आदिवासी समुदाय को शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार, तथा रोजगार जैसे अनेक अवसर प्राप्त हुए हैं। किंतु, इसके साथ ही उसकी पारंपरिक संस्कृति के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। आदिवासी संस्कृति का मूल-आधार 'सामूहिक जीवन', 'प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व', विशिष्ट भाषाई पहचान, प्रकृति-आधारित धार्मिक-आस्था तथा लोक-कलाओं में निहित है। आधुनिकता, औद्योगीकरण, शहरीकरण, विस्थापन और वैश्वीकरण के प्रभाव से ये सभी सांस्कृतिक आधार धीरे-धीरे कमजोर होते दिखाई दे रहे हैं। अतः इस बात

की बहुत आवश्यकता है कि आधुनिक विकास और आदिवासी सांस्कृतिक संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित किया जाए ।

सहायक ग्रंथ सूची

1. *शर्मा, विनय कुमार ; आदिवासी विश्वकोश (आदिवासी समाज एवं धर्म) ; 2019 ; अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ; पृष्ठ संख्या – 95*
2. *गुप्ता, रमणिका (सम्पादक) ; आदिवासी कौन ; 2022 ; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली ; पृष्ठ संख्या – 37*
3. *वही ; पृष्ठ संख्या - 26*
4. *वही ; पृष्ठ संख्या – 29*
5. *टेटे वंदना; आदिवासी दर्शन और साहित्य; पृष्ठ संख्या- 34*
6. *दोषी एस०एल० । जैन पी० सी०; जनजातीय समाजशास्त्र; 2020 ; रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर; पृष्ठ संख्या- 222*
7. *दोषी एस०एल० । जैन पी० सी०; जनजातीय समाजशास्त्र; 2020 ; रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर ; पृष्ठ संख्या- 223*
8. *गुप्ता, रमणिका (सम्पादक) ; आदिवासी कौन ; 2022 ; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली ; पृष्ठ संख्या – 39*
9. *दोषी एस. एल. । जैन पी. सी. जनजातीय समाजशास्त्र ; 2020 ; रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर ; पृष्ठ संख्या -199*
10. *हसनैन, नदीम ; जनजातीय भारत ; 2013 ; जवाहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली ; पृष्ठ संख्या – 325*
11. *टेटे, वंदना ; आदिवासी साहित्य: परम्परा एवं प्रयोजन ; 2013 ; प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन, रांची ; पृष्ठ संख्या – 90*
12. *वही, पृष्ठ संख्या- 93-94*

***